ISSN:2583-8849



सुनील गज्जाणी
बीकानेर, राजस्थान

पीड़

जैसे ही उस घर के सामने वीआईपी गाड़ी रुकी आस-पास खड़े लोग फुसफुसानें लगे ! ''क्या किस्मत पायी है शर्मा जी ने कभी नेता,कभी प्रशासानिक अधिकारी तो कभी सैन्य अधिकारी सभी पिछले दो-तीन दिनों से रह-रह कर मिलने आ रहे है !'' एक व्यक्ति बोला !

''इन सबसे अच्छी जान-पहचान हो गयी होगी अब तो शर्मा जी की''! दूसरा बुदबुदाया !

''सब बेटे के कारण एप्रोच बन रही है शर्मा जी की!'' तीसरा अपनी आँख मींचता बोला !

''चलो,लगे हाथ हम सब भी मिल आते है, क्यूँ क्या राय है ?'' ! चौथे ने अपनी बात रखी !

''हाँ,हाँ क्यूँ नहीं !'' तीनो समवेत स्वर में !

''आखिर हम भी पडोसी है उनके, उनकी ये ऊँची जान-पहचान कहीं हमारे भी कुछ काम आ जाए !'' पहले ने कहा !

''मगर उनके सामने फालतू या ऊलजलूल मत बक देना,समझे सब !'' दूसरा दूसरा अपना झाड़ता बोला !

''ठीक है,ठीक है ! उनसे बातचीत की शुरुआत आप ही कीजियेगा वर्मा जी, क्यूंकि आप को इस प्रकार की बातचीत का तज़ुर्बा है ! तीसरे से कहा !

''हाँ, सही बात ! चलो तब जल्द चला जाए,कोई और वीआईपी आये उससे पहले हम मिल आते है ! तीसरे की बात का समर्थन करते हुए फटाफट कदम बढ़ते हुए शर्मा जी के घर की तरह चल पड़े ! दरवाज़े तक पहुंचे ही थे की पहले आये वीआईपी गाड़ी में बैठ चल दिए तो वे और तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए बैठकखाने की और चल पड़े फिर अभिवादन उपरान्त वर्मा जी ग़मगीन चेहरा बना अपने दल का प्रतिनिधित्व करते हुए बोले -

''शर्मा जी हमारे लायक कोई भी काम होतो अपना समझ हमें अवश्य बताइएगा, आखिर पडोसी ही पडोसी के काम आता है, क्यूँ शुक्ल जी मैंने गलत तो नहीं कहा ना !'' अपने साथी से पूछा !

''कैसी बात करते है,एक दम खरी बात ! शर्मा जी, पहला सुख तो हम अच्छा पडोसी ही मानते है और यह सुख हमें सदा आप से मिलता रहा है और मिलता भी रहेगा ! क्यूँ पांडे जी मोहल्ले वाले क्या कहते है शर्मा जी के बारे में ?''!

''मिसाल देते है मिसाल मिश्रा जी !''

''शर्मा जी,मोहल्ले में यह चर्चा ज़ोरो पर है कि कल मुख्यमंत्री जी भी आप से मिलने आ रहे है !''

''हाँ, आ रहे है पांडे जी ! मगर मुझे क्या फर्क पड़ता है सीएम आये या पीएम !''

''आप से सुन बड़ा ताज़्ज़ुब हुआ,ऐसा क्यूँ ! क्या यह बड़ी बात नहीं है ?!''

''यह तो नैतिक कर्तव्य है उनका, जो मेरे लिए कोई बड़ा ताज़्ज़ुब नहीं !''

ऐसा जवाब सुन चारों एक-दूसरे का मुँह देखने लगे !

''हाँ,मुझे अभिमान है अपने बेटे पर जिसने मेरा मष्तक गर्व से ऊँचा कर दिया ! जो ईस्ट बड़े-बड़े व्यक्तित्व मुझसे मिलने आ रहे है ! मगर एक पिता के नाते आप सब से एक बात पूछूं ?!''

''हाँ ,हाँ शर्मा जी अपने पूर्ण अधिकार से पूछिए !'' मिश्रा जी बोले !

ISSN:2583-8849

तज़ुर्बा

''यार मेरी समझ में ये नहीं आ रहा कि ये इंसानों का हुज़ूम कुछ दिनों पहले हिन्दू धर्म यात्रा में लगा था जबकि आज उन्हीं में से कुछ दलित आरक्षण यात्रा के झंडे थामे अपना आंदोलन कर रहे हैं तो ..... ''।

''तो तुझे क्या, कोई दिक्कत है तुझे ?''

''दिक्कत नहीं, मगर बात समझ नहीं आयी कि उस दिन हिन्दुत्व का नारा लगा रहे थे और आज लगा रहे है दलित्व का नारा !''

''हम्म, तेरी बात तो सही है !'' दो युवा गिद्व ऊँचे टीले पर बैठे आंदोलन कर रही भीड़ का नज़ारा देखते हुए आपस में मंत्रणा कर रहे थे की तभी एक वृद्व गिद्व भी उनके बीच आकर बैठ गया और उनकी बातें सुंनने लगा !

''यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि संकट हिंदुत्व पर है या दलित्व पर ?''

''संकट तो दोनों पर नहीं है , बस हिन्दू तब अपना वर्चस्व दिखा रहे थे तो उन्हीं में से दलित्व अपना अधिकार पाने के लिए आज लड़ रहे है, आंदोलन रहे हैं !'' दूसरा पहले की जिज्ञासा शांत करते हुए बोला !

''यार कितना अज़ीब है ,वर्चस्व वाले शायद अपना अधिकार देने के इच्छुक नहीं तो अधिकार मांगने वाले उसके लिए अपना ऐसे उग्र आंदोलन प्रदर्शित कर रहे हैं ,अपना रुतबा दिखा रहे है ! इंसान, इंसान होने से पहले जाति,समुदाय में पहले बट जाता है ''

पहला खिन्न भाव से बोला !

''लेकिन एक बात कहूं बच्चों ,हिन्दुत्व और दलित्व के बीच उसकी दाल अच्छी गल रही है !''

वृद्व गिद्व हस्तक्षेप करता हुआ बोला, ये सुन विस्मय भाव से वे दोनों पूछ बैठे !

''उसकी दाल ! इन दोनों के बीच तीसरा कौन हैं जिसकी दाल गल रही हैं ? समझाइये हमें ''

''राजनीति की'' वृद्व गिद्व ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और अपनी उड़ान भर ली ! दोनों असमझ भाव में कभी उसकी उड़ान को देखते तो कभी उस हुज़ूम को !

उपहार

''वाह, मेरा बेटा तो एक दम अमीर लग रहा है ये कपडे पहन कर, खूब जच रहे है तुझ पे !''

''अरे अम्मा ! जचूंगा तो सही, आज मेरा जन्म दिन जो है !''

'''मेरा राजा बेटा,तेरी इच्छा थी ना कि पिंटू बाबा जैसे कपडे तू पहने ? !''

''हां अम्मा, मैंने देखा था जब आप चुपके से ले रही थी !''

''देखा था ! तेरी ज़िद ऐसे कपड़ों की ही थी ना जन्मदिन पे ! मगर तुझे पता है अपनी हैसियत इतने महंगे कपड़े खरीदने की थोड़ी ना है तो मैंने ..!''

''तभी तो आप ने अपनी मालकिन से चुपक-से पिंटू बाबा के ये पुराने कपड़ें मुझसे से नज़र चुरा मांग लिए थे मगर अम्मा फिर भी मैंने देख लिया था !''

माँ अपने नन्हे बेटे को गले लगाती रुआंसी बोली -

''सही बात है बेटा, तेरी ऐसी इच्छा भला ओर कैसे पूरा कर पाती बता ! मगर तेरे बदन के लिए तो नए ही है ना !''